



In-Text Questions and Answers

मौखिक (Oral)

1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

कथा नायक की रुचि खेलकूद में थी, जैसे कंकड़ियाँ उछालना, कागज़ की तितलियाँ उड़ाना, कबड्डी, वॉलीबॉल, गुल्ली-डंडा और पतंगबाज़ी।

2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल "कहाँ थे?" पूछते थे।

3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई में आत्म-विश्वास बढ़ा और वह अधिक स्वतंत्र हो गया, खेलकूद में अधिक समय बिताने लगा, और उसे लगने लगा कि वह पढ़े या न पढ़े, पास हो ही जाएगा।

4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे और नौवीं कक्षा में पढ़ते थे, जबकि छोटा भाई पाँचवीं में था।

5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर या किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाते थे, या एक ही नाम/शब्द/वाक्य दस-बीस बार लिखते थे।

लिखित (Written - 25-30 शब्दों में)

1. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

छोटे भाई ने टाइम-टेबिल बनाते समय सोचा कि वह प्रातः 6 बजे से रात 11 बजे तक विभिन्न विषयों का अध्ययन करेगा और खेलकूद को पूरी तरह से हटा देगा। हालाँकि, मैदान की हरियाली, हवा के झोंके, और खेलकूद उसे अनजाने में अपनी ओर खींच लेते थे, जिससे वह अपने बनाए टाइम-टेबिल का पालन नहीं कर पाया।

2. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

एक दिन जब छोटा भाई गुल्ली-डंडा खेलकर लौटा, तो बड़े भाई साहब ने उसे बहुत डाँटा। उन्होंने उसके अहंकार को तोड़ने के लिए रावण, शैतान और शाहेरूम के अभिमान के उदाहरण दिए और समझाया कि केवल परीक्षा पास करना ही सब कुछ नहीं है, बल्कि बुद्धि का विकास और जीवन का अनुभव ज़रूरी है।

3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

बड़े भाई साहब को अपने छोटे भाई के लिए एक मिसाल कायम करनी थी। बड़े होने के नाते उनसे अपेक्षाएँ थीं कि वह जो कुछ भी करें वह छोटे भाई के लिए आदर्श हो, इस कारण उन्हें अपने बचपने और मन की इच्छाओं (जैसे खेलकूद) को दबाना पड़ता था।



4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

बड़े भाई साहब छोटे भाई को सलाह देते थे कि वह घमंड न करे और किताबी ज्ञान के बजाय जीवन के अनुभव को महत्व दे. वे उसे यह भी समझाते थे कि परीक्षा पास करना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि बुद्धि का विकास और समझदारी ही असली शिक्षा है. वे ऐसा इसलिए करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि वे बड़े हैं और छोटे भाई के हित के लिए उसे सही राह दिखाना उनका कर्तव्य है.

5. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया?

छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का अनुचित लाभ उठाया. उसे यह धारणा हो गई कि वह पढ़े या न पढ़े, पास हो ही जाएगा, और इसलिए उसने पढ़ाई कम कर दी और पतंगबाज़ी जैसे अपने शौक में ज़्यादा समय देने लगा.

लिखित (Written - 50-60 शब्दों में)

1. बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

नहीं, अगर बड़े भाई की डाँट-फटकार न मिलती, तो छोटा भाई शायद कक्षा में अव्वल नहीं आता. छोटे भाई का मन पढ़ाई में बिलकुल नहीं लगता था और वह खेलकूद में ही डूबा रहता था. बड़े भाई के डर और उनकी निगरानी के कारण ही वह थोड़ा-बहुत पढ़ लेता था ताकि उसे जलील न होना पड़े. हालाँकि वह अपनी योग्यता से पास होता था, लेकिन बड़े भाई के उपदेश और डाँट-फटकार ने उसे पढ़ाई के प्रति थोड़ा गंभीर तो रखा ही.

2. इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

लेखक ने इस पाठ में रटंत प्रणाली, अव्यावहारिक पाठ्यक्रम और परीक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया है. उन्होंने ऐसी शिक्षा प्रणाली पर सवाल उठाया है जहाँ छात्रों को व्यर्थ की बातें रटनी पड़ती हैं, और एक छोटी सी बात पर कई पन्नों का निबंध लिखना पड़ता है. मैं लेखक के विचारों से सहमत हूँ कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना या रटना नहीं, बल्कि बुद्धि का विकास और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना होना चाहिए.

3. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

बड़े भाई साहब के अनुसार, जीवन की समझ किताबी ज्ञान से नहीं, बल्कि दुनिया देखने से, यानी अनुभवों से आती है. वे अपने माता-पिता का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि भले ही वे कम पढ़े-लिखे हों, लेकिन उन्हें दुनिया और जीवन का उनसे कहीं अधिक अनुभव है. वे मानते हैं कि वास्तविक समझ मुसीबतों का सामना करने और व्यावहारिक रूप से जीवन जीने से आती है, न कि केवल डिग्रियाँ हासिल करने से.

4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा तब उत्पन्न हुई जब बड़े भाई ने उसे पतंग पकड़ते हुए डाँटा, लेकिन साथ ही अपनी ज़िम्मेदारी और अपने मन की इच्छाओं को दबाने की बात ईमानदारी से स्वीकार की. बड़े भाई ने बताया कि वह खुद भी पतंग उड़ाना चाहते हैं, लेकिन छोटे भाई को सही रास्ते पर रखने की अपनी ज़िम्मेदारी के कारण ऐसा नहीं करते. यह सुनकर छोटे भाई को अपनी लघुता का अनुभव हुआ और उसे बड़े भाई के त्याग और कर्तव्यनिष्ठा का एहसास हुआ, जिससे उसके मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई.

5. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।



बड़े भाई साहब स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे, हमेशा किताबें खोले रहते थे। वे मेहनती थे, लेकिन परीक्षा में सफल नहीं हो पाते थे। वे बहुत उपदेश देते थे, और उनकी भाषा में मुहावरों और सूक्तियों का प्रयोग होता था। वे छोटे भाई के प्रति ज़िम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ थे, उसे सही राह पर रखने की पूरी कोशिश करते थे। उनमें अहंकार नहीं था और वे व्यावहारिक ज्ञान को किताबी ज्ञान से ज़्यादा महत्व देते थे। अंततः उनमें सहिष्णुता और अपने बचपन को त्यागने की क्षमता भी थी।

6. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से ज़्यादा महत्वपूर्ण कहा है। उन्होंने तर्क दिया कि बुद्धि का विकास केवल किताबें पढ़ने से नहीं होता, बल्कि दुनिया के अनुभवों से होता है। उन्होंने अपने माता-पिता और हेडमास्टर के उदाहरण दिए, जिनके पास भले ही डिग्रियाँ न हों, लेकिन वे जीवन के व्यावहारिक मामलों को बेहतर ढंग से संभालते हैं। उनके अनुसार, अनुभव हमें सही-गलत का विवेक देता है और मुश्किल परिस्थितियों से निपटने की समझ देता है।

7. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

- **(क) छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।** छोटा भाई अपने भाई साहब के हुक्म को कानून समझता था। जब भाई साहब फेल हुए और छोटा भाई पास हुआ, तब भी उसे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार भी लज्जास्पद लगा। वह भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर पतंग उड़ाता था ताकि उन्हें यह संदेह न हो कि उसका सम्मान कम हो गया है। अंत में, जब बड़े भाई साहब ने उसे फटकारा, तो उसने नम आँखों से स्वीकार किया कि वे जो कह रहे हैं वह बिलकुल सच है और उन्हें कहने का अधिकार है, जिससे उसकी श्रद्धा प्रकट होती है।
- **(ख) भाई साहब को ज़िंदगी का अच्छा अनुभव है।** भाई साहब कहते हैं, "मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुर्बा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.फ़िल. और डी.लिट्. ही क्यों न हो जाओ"। वे अपने दादा और हेडमास्टर की बूढ़ी माँ का उदाहरण देते हैं, जिनके पास किताबी ज्ञान कम है, लेकिन जीवन चलाने और मुश्किलों से निपटने का बेहतर अनुभव है। ये अंश दर्शाते हैं कि उन्हें किताबी ज्ञान से परे जीवन की गहरी समझ है।
- **(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।** यह इस अंश से पता चलता है कि जब छोटा भाई पतंग लूटने के लिए दौड़ रहा होता है और भाई साहब उसे पकड़ते हैं, तो वह उसे डाँटते हैं, लेकिन फिर स्वीकार करते हैं कि उनका भी जी पतंग उड़ाने को ललचाता है। कहानी के अंत में, एक कटी हुई पतंग देखकर भाई साहब खुद उछलकर उसकी डोर पकड़ लेते हैं और होस्टल की तरफ बेतहाशा दौड़ पड़ते हैं, और छोटा भाई उनके पीछे-पीछे दौड़ता है। यह हरकत उनके भीतर के बच्चे को उजागर करती है।
- **(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।** यह इस अंश से पता चलता है: "आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से"। उनके सभी उपदेश और डाँट-फटकार छोटे भाई को सही रास्ते पर रखने और उसके भविष्य को बेहतर बनाने के उद्देश्य से ही होते हैं।

आशय स्पष्ट कीजिए (Explain the meaning)

1. इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास।



आशय: इस कथन का आशय यह है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना या अंक प्राप्त करना नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति की बुद्धि का विकास हो, उसे सोचने-समझने की शक्ति मिले, और वह व्यावहारिक जीवन में सही निर्णय ले सके। किताबी ज्ञान तभी उपयोगी है जब वह व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व और समझ को विकसित करे।

2. फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

आशय: इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य चाहे कितनी भी बड़ी मुसीबत या मृत्यु के करीब क्यों न हो, वह सांसारिक मोह-माया से बंधा रहता है, उसी प्रकार छोटे भाई को बड़े भाई की डाँट-फटकार और अपमान झेलने के बावजूद भी वह खेलकूद के प्रति अपने आकर्षण को त्याग नहीं पाता था। उसकी खेलकूद में रुचि इतनी प्रबल थी कि वह लाख कोशिश के बाद भी उससे दूर नहीं रह पाता था।

3. बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

आशय: यह एक मुहावरा है जिसका अर्थ है कि यदि किसी चीज़ की नींव ही मज़बूत न हो, तो वह चीज़ स्थायी या टिकाऊ कैसे हो सकती है? बड़े भाई साहब इसे पढ़ाई के संदर्भ में कहते हैं कि यदि शिक्षा की शुरुआती नींव (बुनियाद) मज़बूत न हो, तो आगे चलकर उच्च शिक्षा या वास्तविक ज्ञान की इमारत कैसे खड़ी हो पाएगी? वे धीरे-धीरे और ठोस तरीके से पढ़ने में विश्वास करते थे।

4. आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

आशय: यह पंक्ति छोटे भाई के पतंग के प्रति अत्यधिक लगाव को दर्शाती है। जब कोई पतंग कटकर आसमान से गिरती है, तो वह उसे एक 'आकाशगामी पथिक' (आकाश में यात्रा करने वाले राही) के रूप में देखता है। वह पतंग को एक ऐसी आत्मा के समान मानता है जो स्वर्ग से निकलकर उदासीन भाव से नए संस्कार प्राप्त करने पृथ्वी पर आ रही है। यह तुलना छोटे भाई की कल्पनाशीलता और पतंगबाजी के प्रति उसके गहरे भावनात्मक जुड़ाव को व्यक्त करती है।

भाषा अध्ययन (Language Study)

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

- नसीहत: सलाह, उपदेश
- रोष: गुस्सा, क्रोध
- आज़ादी: स्वतंत्रता, मुक्ति
- राजा: नृप, नरेश
- ताज्जुब: आश्चर्य, हैरानी

2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

- सिर पर नंगी तलवार लटकना: परीक्षा में फेल होने के डर से छोटे भाई के सिर पर हमेशा नंगी तलवार लटकती रहती थी।



- **आड़े हाथों लेना:** जब छोटा भाई कक्षा में अव्वल आया, तो उसके मन में आया कि वह बड़े भाई साहब को आड़े हाथों ले.
- **अंधे के हाथ बटेर लगाना:** बड़े भाई साहब ने कहा कि छोटे भाई का पास होना उसकी मेहनत से नहीं, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लगाने जैसा था.
- **लोहे के चने चबाना:** बड़े भाई साहब ने छोटे भाई से कहा कि उनके दरजे में आकर उसे अलजेबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे.
- **दाँतों पसीना आना:** गणित के कठिन सवाल हल करते हुए मुझे दाँतों पसीना आ गया.
- **ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा:** बड़े भाई साहब ने कहा कि अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा भी विद्वान हो जाए.

3. निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए।

- **तत्सम:** जन्मसिद्ध, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण
- **तद्भव:** आँख, दाल-भात
- **देशज:** पोशीशन (यह शब्द आगत है, लेकिन उदाहरण में दिया गया है), फ़ज़ीहत (यह शब्द भी आगत है, लेकिन उदाहरण में दिया गया है), लताड़, घुड़कियाँ, आंखफोड़, जानलेवा
- **आगत (अंग्रेज़ी एवं उर्दू/अरबी-फ़ारसी):** पोशीशन, फ़ज़ीहत, तालीम, जल्दबाज़ी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हर्फ़, सूक्तिबाण, पन्ना, मेला-तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, टाइम-टेबिल, अफ़सोस (यह शब्द दिए गए शब्दों में नहीं है, लेकिन उदाहरण के लिए हो सकता है)